शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

गोपालदास 'नीरज' का बहुआयामी व्यक्तित्व और जीवन मूल्य

डॉ० मंजू चौहान
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, देवता महाविद्यालय, मौरना बिजनौर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

गोपालदास 'नीरज' का बहुआयामी व्यक्तित्व और जीवन मूल्य

- डॉ० मंजू चौहान

गोपालदास 'नीरज' हिन्दी गीति परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। अध्यापन और गीति रचना उनकी आजीविका और व्यक्तित्व के दो महत्वपूर्ण छोर हैं। एक कवि से अलग कृतित्व और व्यक्तित्व को मूल्यांकित करने का प्रयास है यह शोध आलेख।

विषय संकेतः- गोपालदास 'नीरज', हिन्दी गीति परंपरा, हिन्दी कवि, जीवन मूल्य

गोपालदास 'नीरज' आधुनिक युग के ऐसे शीर्षस्थ कवि हैं जिनके व्यक्तित्व में एक गीतकार ही नहीं बल्कि अनेक चरित्र सम्मिलित हैं। जो अपनी प्रतिभा से काव्य-जगत में अमिट छाप बनाए हुए हैं। एक ऐसे कवि जो हिन्दी काव्य के लोक गीतों, उसकी परम्पराओं की रक्षा करने में समर्थ हैं। नीरज जी ने अपने अन्दर के मंच-कवि को खुला एवं विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया है। ताकि उनकी प्रतिभा सभी के समक्ष उभरकर आये और प्रत्येक के मन पर अपना अधिकार स्थापित कर सके। नीरज जी कवि के साथ-साथ एक सफल गीतकार भी है। वह भी ऐसे गीतकार जिन्होंने सभी के दिलों पर अपना अधिपत्य जमा लिया हो। नीरज की प्रसिद्धि केवल गीतकार के रूप में ही नहीं हुई बल्कि उनकी प्रसिद्धि मुक्तककार, सिनेगीतकार, गीतिकाकार एंव मंच कवि आदि विभिन्न रूपों में हुआ है। इनके साथ-साथ उन्होंने गजल के क्षेत्र में भी एक अलग ही पहचान बनाई है। नीरज जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी गीतकार हैं। जिन्होंने अपने भीतर के कवि को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। ताकि उनकी प्रतिभा प्रस्फुटित होकर जन-मानस के समक्ष आ सके।

हिन्दी काव्य के शिरोमणि और काव्य-विकास को जानने-समझने वाले नीरज जी का जन्म इटावा जिले के पुरावली नामक गाँव में 4 जनवरी, 1925 को हुआ। पारिवारिक स्थिति ठीक न हो सकने के कारण इन्होंने अपनी शिक्षा अपने फूफा जी के घर पर प्राप्त को । नीरज जी ने जो भी काम मिला, वह खुश होकर किया। काम छोटा हो या बड़ा, काम तो काम है। उसे करने में कैसी लज्जा। इसी उक्ति को मानते हुए नीरज जी सभी के दिलों पर राज करते हैं। उनकी जितनी भी रचनायें है, सभी में मानवता का संदेश है। अगर व्यक्ति में कुछ कर गुजरने की ललक है तो वह एक-न-एक दिन सफलता की चरम सीमा पर पहुँच ही जायेगा। नीरज जी बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वह सदैव जागृत और प्रत्येक परिस्थिति में संतुलित रहने वाले हैं। उनमें आश्चर्य चकित कर देने वाले अनुशासन और सिद्धान्तों पर अटल रहने का साहस है।

नीरज जी एक अध्यापक भी रहे हैं। लेकिन अध्यापन कार्य में मन न लगने के कारण उन्होंने उस पद से त्यागपत्र दे दिया और कविता पाठ करने लगे। नीरज जी को कविता करने का शौक नवीं कक्षा से ही था, उन्हें इतनी छोटी आयु में कविता करना रुचिकर लगता था। धीरे-धीरे वे अपनी कविता को मंच पर पढ़ने लगे। उनका अधिकतर समय मंच पर कविता करने में ही बीतता है। नीरज जी स्वभाव से ही बड़े विनम्र, अनुशासन प्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, मनमौजी स्वभाव, फक्कड़ स्वभाव और क्षमाशील स्वभाव के रहे हैं। उनके पास कोई भी व्यक्ति कभी-भी पहुँच जाए, किसी के कार्य को मना नहीं करते। वह ऐसे व्यक्तियों की सदैव सहायता करते हैं, जो स्वयं से कुछ करने की इच्छा रखता हो। नीरज जी मानवता प्रेमी कवि हैं, इसलिए वह मानव को सन्देश देते हुए कहते हैं-

''और विश को भी अमृत की धार करता हूँ
आदमी हूँ, आदमी को प्यार करता हूँ।।''[1]

नीरज जी ने अपने काव्य में समाज से जुड़े अनेक पहलुओं का चित्रांकन कर उन्हें पाठकों के सम्मुख उजागर किया, जिससे समाज को नई दिशा और ज्ञान प्राप्त हो सके, क्योंकि आज का पाठक साहित्य

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

गोपालदास 'नीरज' का बहुआयामी व्यक्तित्व और जीवन मूल्य

डॉ० मंजू चौहान
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, देवता महाविद्यालय, मौरना बिजनौर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

और काव्य से दूर होता जा रहा है उसे सही कविता करने की समझ नहीं है इसलिए नीरज जी ने अपनी रचनाओं के महायुग से मानव को काव्य से जोड़ने का प्रयास किया है। उनका सम्पूर्ण काव्य काव्यगत विषेशताओं से युक्त है और मानव जीवन को नई दिशा देने वाला है। उनकी प्रत्येक रचना चाहे वह गीत हो, गीतिका हो, मुक्तक हो या सिनेगीत हो, सभी आधुनिकता से युक्त हैं। नीरज जी केवल एक ही विधा के ज्ञाता नहीं है बल्कि उन्होंने काव्य क्षेत्र में अनेक रचनाओं का सृजन किया है, उनका सम्पूर्ण काव्य प्रेरित करने वाला है। नीरज जी ने विविध विधाओं में काव्य सर्जना करके हिन्दी काव्य की जो श्री वृ की है। वह विस्मरणीय है। नीरज जी एक प्रसिद्ध गीतकार, गीतिकाकार, दार्शनिक कवि, मंच कवि एवं मुक्तककार के रूप में ख्याति प्राप्त किये हुये हैं। उन्हें विविध रूपों में लोकप्रितिष्ठित किया गया।

(क) गीतकार के रूप में-

नीरज जी ने मानव जीवन के सभी पक्षों का वर्णन किया ह। चाहे वह अमीरी हो, गरीबी हो, राजनीतिक या धार्मिक हो, उन्हें जहाँ कुछ ठीक होता दिखाई नहीं दिया, वहीं कविता लिख डाली। उन्होंने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर पाठकों को नवीन सशक्त दृष्टि प्रदान की है। उनकी रचनायें आशा-निराशा और दृढ़ता के भावों से युक्त हैं। उनके गीत मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो पाठकों को नई दिशा प्रदान करते है। जीवन के उच्चतर मूल्यों के प्रति दृढ़ आस्था लेकर चलने वाले आशावादी गीतकार के रूप में नीरज जी ने गीत लिखे हैं, वे अभिनन्दनीय हैं, सराहनीय हैं। इनके गीतों में सामाजिक परिवेश, मानवीय सम्बन्धों की कटुता, शहरीकरण के कारण गिरते व टूटते मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों का बार-बार वर्णन किया है किन्तु यह वर्णन नये कथ्यों एवं अनुभवों को लेकर हुआ है। इनके सभी गीत समाज में बढ़ती कुरीतियों, विसंगतियों एंव अलगाववाद पर सीधे प्रहार करते हैं, उन्होंने मानवीय शक्ति को पहचानकर समाज के हित के लिए कार्य करने तथा नई आशा एवं विश्वास की ज्योति जगाने का आहवान किया है तथा पाठकों को नवीन हौसला देने तथा नई दिशा एंव सीधा-सरल रास्ता दिखाने के प्रयास के साथ ही जीवन की कड़वी-मीठी सच्चाइयों से अवगत कराने का प्रयास किया है। नीरज जी के गीत जीवन का वास्तविक दर्पण हैं। उन्होंने अपनी जिज्ञासा इन गीतों में व्यक्त की है

''कुछ ऐसी लूट मची जीवन चौराहे पर,
खुद को ही खुद लूटने लगा हर सौदागर।''[2]

(ख) गीतिकाकार के रूप में:-

स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी काव्य में जिन काव्य साधकों ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है, उनमें गोपालदास 'नीरज' जी का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने काव्य लेखन के गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह करते हुये साहित्य की जो श्री वृद्धि की है। वह सराहनीय है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी नीरज जी का काव्यात्मक रुझान बचपन से ही रहा है। बचपन से ही लिखी गई कविताओं का यह क्रमबद्व रूप आज भी है। इन्होंने गीतिका के क्षेत्र में प्रसिद्वि प्राप्त की है। इन गीतिकाओं को माध्यम बनाकर मानव-जीवन को उचित मार्ग दिखाया है तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है। गीतिकाओं से वर्तमान में जी रहे आदमी की पीड़ा और समस्याओं को स्वर मिला है। गीतिका आज के जन-जीवन को सही अभिव्यक्ति देने का माध्यम बन गई है। वह एकायामी न होकर बहुआयामी हैं। जिसके माध्यम से देश की स्थिति का परिचय हो रहा है। आजकल देश में मानवता ही समाप्त हो रही है, उसके जीवन-मूल्यों का कोई अर्थ नहीं है, वह धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। उदाहरणार्थ-

''ज्यों लूट लें कहार ही दुलहिन की पालकी
हालत यही है, आजकल हिन्दोस्तान की।''[3]

(ग) मुक्तककार के रूप में-

एक मुक्तककार के रूप में नीरज जी ने अलग ही पहचान बनाई है। नीरज जी की पैनी दृष्टि से कुछ नहीं बच पाया है। इन मुक्तको में सामाजिक जीवन की अनेक विद्रपताओं और संवेदनाओं को उजागर किया है। मानवीय जीवन-मूल्यों के साथ-साथ नीरज जी ने व्यक्ति के प्रत्येक उन पहलुओं का वर्णन अपने

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

डॉ० मंजू चौहान
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, देवता महाविद्यालय, मौरना बिजनौर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

मुक्तको में किया ह, जिसे व्यक्ति स्वीकार नहीं करना चाहता है। वह सच्चाइयों से मुँह मोड़ लेना चाहता है। नीरज जी ने मुक्तक साहित्य में आदमी की पीड़ा और उनसे जुड़े हुए परिवेश को इसमें व्यक्त किया है। इसके द्वारा नीरज जी ने मानव के अन्तर्मन तक पहुँचने का प्रयास किया हैं। नीरज जी ने मुक्तकों के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से स्वयं को भी प्रभावित किया है। इनके मुक्तकों की भाषा सरल एवं प्रभावपूर्ण है। उनकी आवाज में जादू है। जिसे सुनकर पाठक उनकी ओर खींचा चला आता है। जब वह कविता पाठ करते हैं तो लगता है कि नीरज जी ने नशा किया है लेकिन ऐसा नहीं, उनकी कविता में मादकता ही इतनी है कि नीरज जी स्वयं ही क्या, कोई और भी सुनेगा तो वह भी मदहोश हो जायेगा। रुबाई शैली में अपने मन की बात कहने का ढंग नीरज जी का अलग ही है-

''क्या कहें यार, हमें यारों ने क्या-क्या समझा?
किसी ने कतरा, किसी ने हमं दरिया समझा।''4

(घ) सिनेगीतकार के रूप में-

नीरज जी मूलत:कवि हैं। वे रससिद्ध एवं कण्डसिद्ध कवि हैं। वे जिस मंच पर ''कारवाँ गुजर गया.. ...।''से लेकर आज तक प्रस्तुत होते रहे हैं, मंच को जीतने वाले कवि माने गये हैं। नीरज जी ने जब से मुम्बई पदार्पण किया तभी से वह समय सिनेगीतकाल का माना जाता है, उन्होंने 1960 में फिल्म क्षेत्र में कदम रखा। उनके मुम्बई आते ही फिल्म क्षेत्र में उनकी प्रसिद्धि एक श्रेष्ठ गीतकार के रूप में हुई। उन्होंने 'नई उमर की नई फसल' का गीत 'कारवाँ गुजर गया...।''पहली बार रेडियो पर गाया, तभी से उनका बॉलीबुड से सम्बन्ध स्थापित हुआ। उनके गीतों की धुनों में अलग-सा एहसास है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। उन्होंने एक नहीं, कई फिल्मों के लिए गीत लिखे और गाये हैं। 'मेरा नाम जोकर' फिल्म का गीत 'ऐ भाई। जरा देख के चलो।' इतना अधिक प्रसिद्ध हुआ कि नीरज जी के लिए और अधिक फिल्मों के गीतों के ऑर्डर आने लगे। इस गीत में मानव को प्रेरित किया गया है कि वह मानव के साथ मानव जैसा ही व्यवहार करे। जीवन की सच्चाई को जाने कि वह कितने कड़वे सत्यों से भरी हुई है। नीरज जी के गीत रस से भरे हैं। गीतों में इतना रस है कि मानव मन को प्रफुल्लित कर दे। नीरज जी ने 'कन्यादान' फिल्म के लिए एक गीत लिखा, जो चुनौतिपूर्ण था और यह गीत 'कन्यादान' फिल्म में स्थान पाकर प्रसिद्ध हो गया-

''लिखे जो खत तुझे, वो तेरी याद में
हजारों रंग के नजारे बन गये।''5

(ड़) एक मंचकवि के रूप में-

नीरज जी ने आधुनिक काव्य में अलग-अलग पहचान बनाई है, जिसमें नीरज जी सबसे अधिक लोकप्रिय मंचकवि के रूप में हुये। नीरज जी जिस मंच पर नहीं होते, वह मंच सूना-सूना सा लगता है। मानो वह मंच की जान हो। उन्हें काव्य-पाठ करते देखकर मन हर्शित हो जाता है। आज वह 89 वर्ष के हैं तब भी उनकी आवाज में जोश है। इतनी आयु पार-करने के बाद नीरज जी कोई भी कवि-सम्मेलन नहीं छोड़ते। उन्हें मंच पर कविता करने का शौक बचपन से ही रहा है। उन्होंने 1943 में बंगाल में अकाल के समय कलकत्ता में भूख से बिलखते लोगों को देखा तो उनसे रहा नहीं गया। घर आकर तुरन्त कविता लिखी। जिसे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में गाया गया। उनकी इस कविता की सभी ने सराहना की और इस कविता के लिए बेशुमार दाद भी मिली-

''मैं विद्रोही हूँ, जग में विद्रोह कराने आया हूँ
क्रान्ति-क्रान्ति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ।''6

(च) दार्शनिक कवि के रूप में-

नीरज जी ने हिन्दी साहित्य की जो श्री वृद्धि की है, वह अनुपम है, उन्होंने सामाजिक एवं समसामयिक विसंगतियों पर भी विचारात्मक दृष्टि डाली है। उनकी दृष्टि से कुछ भी नहीं बच पाया है। परिवेश की व्यापकता लिए हुए उनका काव्य समाज के पाखंड को उजागर करता है तो ईमानदारी के साथ

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

गोपालदास 'नीरज' का बहुआयामी व्यक्तित्व और जीवन मूल्य

डॉ० मंजू चौहान
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, देवता महाविद्यालय, मौरना बिजनौर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सचेतक की भूमिका का निर्वाह करता है। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक सभी पहलुओं पर विचार किया है। वह किसी एक के पक्ष में कभी नहीं रहे। राजनीति हो या समाज, व्यक्ति हो या परिवार, शिक्षा का क्षेत्र हो या न्याय का क्षेत्र हो, सभी को समान दृष्टि से देखा, उनके लिए ऊँच-नीच की भावना, जाति-पाँति का भेदभाव कोई मतलब नहीं रखता। मानव हो, मानव ही रहो, पशुता को अपने अन्दर प्रवेश मत होने दो। इसलिए नीरज जी सभी विसंगतियां को साफ-साफ दिखाने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं-

''पूर्ण अभी तुझमें अपनापन,
और भरा नस-नस में जीवन,
भीख माँगता तब मानव, जब मानव उसका मन जाता है''[7]

आज जो देश की स्थिति है, वह दयनीय है, उसका जिम्मेदार स्वयं मानव है। मानव एक-दूसरे का शत्रु बन गया है। जहाँ देखो, वहाँ अकारण ही दंगे फसाद हो रहे हैं, कहीं भी अमन चैन नहीं है। ऐसे ही मुजफ्फरनगर शामली में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों से दुखी होकर नीरज जी ने कहा है-

''हिन्दू न मरा है न मुसलमान मरा है,
दंगे के माहौल में इंसान मरा है।''[8]

नीरज जी आज हिन्दी जगत में एक सफल रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। यह उनकी अनवरत मौन साधना का ही परिणाम है। जीवन के उच्चतर मूल्यों के प्रति दृढ़ आस्था लेकर चलने वाले आशावादी रचनाकार के रूप में नीरज जी ने जो प्रतिष्ठा अर्जित की है, वह अभिनन्दनीय है। नीरज जी हमारे देश का गौरव हैं। महामहिम राष्ट्रपति द्वारा 'पदम श्री' से 1991 में नीरज जी को विभूषित किया गया और उसके बाद 2007 में 'पदम भूषण' से अंलकृत किया गया। इसके बाद नीरज जी को एक के बाद एक ख्याति मिलती रही। उन्हें 2012 में उ0प्र0, हिन्दी भाषा संस्थान का कैबिनेट मिनिस्टर का दर्जा प्रदान किया गया। नीरज जी हमारे देश की अमूल्य निधि हैं। इस निधि को माननीय मुलायम सिंह जी ने 14 सितम्बर 2013 को हिन्दी संस्थान के सर्वोच्च सम्मान 'भारत भारती' से विभूषित किया। नीरज जी भले ही सृजन संसार की जीवित किंवदन्ती माने जाते है लेकिन शब्दों के चितेरे 89 वर्ष की जरायु में आज भी नवगीत गाते हैं, जिन्दगी और उसके फलसफों के, कथ्य-अकथ्य के, साकार और निराकार के गीत आज भी लोकप्रिय हैं। उनकी काव्य चेतना का मर्म जिन्दगी और उसे सँजाने-संवारने के तमाम अक्रमों के इर्द-गिर्द ही घूमता है। यह अलग है कि कोई उसमें समान तलाश लेता है तो कोई अध्यात्य व दर्षन।

नीरज जी समाज में संघर्षों एवं संघातो से टकराते हुए एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके स्वभाव में जैसी कोमलता और निर्मलता है, वैसी ही प्रांजलता भी। कभी-कभी उनके संघर्षों से ऐसा प्रतीत होता है कि काव्य ही उनकी आत्मा एवं प्राण है। वह कविता को लिखते हैं तो उसमें रम जाते हैं, उनकी दृष्टि से कुछ भी नहीं बच पाया है। ऐसे भारत के इस रत्न को कोटि-कोटि नमन है, जिसे हमारे ही देष में नहीं बल्कि विदेशों में भी सम्मान दिया जाता है।

सन्दर्भः-

1- बादर बरस गयो, नीरज रचनावली खंड-1, पृ0-207,प्रकाशन-आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 ।
2- आसावरी, नीरज रचनावली खंड-3, पृ0-9 - प्रकाशन, वही।
3- नीरज की गीतिकायें, नीरज रचनावली-खंड-3, पृ0-165/प्रकाशन-वही।
4- एक मस्त फकीरः नीरज, डॉ0-प्रेमकुमार, पृ0-31, प्रकाशन-गैलेक्सी पब्लिषर्स 1362, आत्माराम बिल्डिंग,ग्राउन्ड लोर, दिल्ली-110006 ।
5- एक मस्त फकीरः नीरज, डॉ0 प्रेमकुमार, पृ0-38-प्रकाशन-वही।
6- लहरपुकारे, नीरज रचनावली खंड-1 पृ0-131- प्रकाशन- आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006. ।
7- लहर पुकारे, नीरज रचनावली खंड-1, पृ0-98-प्रकाशन-वही।
8- हिन्दुस्तान टाइम्स (समाचार पत्र) 19 सितम्बर 2013 पृ0-01।